तारा की क्लास
एक बेहतर अवलोकन प्रथा की ओर

गोपाल मिड्ढा

तारा मुम्बई के एक स्कूल में गणित पढ़ाती है। वह चाहती है कि छात्रों को गणित में मज़ा आए। वह यह भी चाहती है कि वे सब टीमवर्क सीखें। एक दिन तारा विद्यार्थियों को पाँच-पाँच के समूह में बाँट देती है। फिर प्रत्येक समूह को एक-एक चार्ट पेपर देती है। प्रत्येक समूह को तीन आयत बनाने हैं और फिर प्रत्येक आयत के कुछ हिस्सों को रंग से भरना है। इसके बाद एक समूह के छात्र को दूसरे समूह के आयतों को देखकर बताना होगा कि प्रत्येक आयत का कितना अंश रंग से भरा गया है। इस गतिविधि का उद्‌देश्य है, बच्चों को भिन्न सिखाना।

निरीक्षण और अवलोकन

प्रिंसिपल शर्मिला, तारा की क्लास का निरीक्षण करने आती हैं। वे देखती हैं कि प्रत्येक समूह में तीन विद्यार्थी आयत बना रहे हैं और शेष दो विद्यार्थी बिना किसी योजना के उसके एक भाग को टेढ़ा-मेढ़ा रंग रहे हैं। इससे भिन्नों को सही मापना बहुत कठिन हो जाता है। वे एक छात्र-समूह को यह बात समझाती हैं, लेकिन छात्र उन्हें देखते हैं, मुस्कराते हैं और रंग भरना जारी रखते हैं। समूहों में गणित से असम्बन्धित बहुत-सी बातें भी हो रही हैं, जिससे कक्षा में बहुत शोर हो रहा है।

दस मिनट के अध्यापन निरीक्षण के बाद शर्मिला निरीक्षण पुस्तिका में अनुशासन, प्रेरणा और निर्देशों की स्पष्टता जैसी चीज़ों का मूल्यांकन करती हैं। फिर वे तारा से कहती हैं, “मुझे लगता है कि छात्र भिन्नों को मापने में सटीक नहीं हैं और आपकी कक्षा में बहुत शोरगुल है।”

तारा जवाब देती है, “मैं मानती हूँ लेकिन छात्र अभी भिन्न सीख रहे हैं और प्रत्येक समूह की निगरानी करना बहुत मुश्किल है।”

शर्मिला निराश महसूस करती हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि तारा उनकी बात नहीं सुन रही है। तारा भी निराश है क्योंकि उसे लगता है कि अवलोकन में बातों को सही से परखा नहीं गया है। प्रोत्साहन तो दूर, समूह-कार्य के माध्यम से गणित पढ़ाने के उसके नवीन प्रयास पर ध्यान ही नहीं दिया गया। तारा निर्णय लेती है कि



अब से वह कक्षा में सिर्फ ब्लैकबोर्ड और लेक्चर से गणित पढ़ाएगी, इस तरह क्लास में शोर भी कम होगा।

शिक्षक-निरीक्षक का तालमेल

तारा की कहानी अनोखी नहीं है। यदि आप कई वर्षों से पढ़ा रहे हैं, तो सम्भव है कि आपकी कक्षा में भी कोई निरीक्षक आया हो। आम तौर पर कक्षा में पीछे बैठकर, वह ब्लैकबोर्ड पर आपके द्वारा लिखी गई चीज़ों को करीब से देखेगा, आपकी बातों को ध्यान से सुनेगा और यह जाँचने की कोशिश करेगा कि विद्यार्थी आपकी बात समझ भी पा रहे हैं या नहीं। हर बार जब आपकी नज़र उस पर जाएगी, तो आप अधिक सतर्क महसूस करेंगे और क्षण भर के लिए शायद विचलित भी हो जाएँ। यदि यह पर्यवेक्षक/निरीक्षक एक प्रधानाध्यापक या वरिष्ठ अधिकारी है, तो यह सतर्कता आपके लिए एक आदर्श शिक्षण मशीन बनने का संघर्ष भी बन सकती है।

यदि आप एक निरीक्षक या पर्यवेक्षक रहे हैं, तो आपको यह समझने में कठिनाई आ सकती है कि किन चीज़ों पर ज़्यादा ध्यान दें। आप पाठ के बीचोबीच किसी छात्र की मदद करने या शिक्षक को गलत होने पर उसे सही करने की ज़रूरत भी महसूस कर सकते हैं। और फिर पाठ के बाद आलोचनात्मक प्रतिक्रिया देने में हमेशा थोड़ी झिझक भी होती है

कि कहीं अध्यापक का मनोबल न गिर जाए। कुल मिलाकर, निरीक्षण किस चीज़ का करना है और किन बातों पर प्रतिक्रिया देनी है, यह तय करना उतना ही मुश्किल है जितना एक नदी के बीच में खड़े होकर यह तय करना कि वह कैसे बहती है और उसे सही दिशा में कैसे निर्देशित किया जाए।

अवलोकन का महत्व

फिर भी कक्षा-अवलोकन एक ज़रूरी क्रिया मानी जाती है। जब मैं शिक्षा से जुड़े लोगों से पूछता हूँ कि हमें यह देखने की आवश्यकता क्यों है कि शिक्षक कैसे पढ़ाते हैं, तो मुझे पाठ-अवलोकन के कुछ लाभ बताए जाते हैं, जैसे वे संरचित तौर से आकलन करने में मदद करते हैं कि क्या और कैसे पढ़ाया जा रहा है, शिक्षण में सुधार के सुझाव देते हैं, अच्छे शैक्षिक तरीकों/मानकों को प्रोत्साहन देते हैं और शिक्षक जवाबदेही को बल प्रदान करते हैं।

हालाँकि, ये लाभ उपयोगी हैं लेकिन शोध से पता चलता है कि ये लाभ अक्सर हासिल नहीं होते। इसकी बजाय कक्षा-अवलोकन शिक्षकों पर अनुचित दबाव डालने का काम करते हैं। ज़्यादातर मामलों में, अवलोकन शिक्षक-प्रेरणा को कम भी कर देता है। एक अनुभवी शिक्षक के शब्दों में – "अवलोकन शिक्षण का सच नहीं मापता क्योंकि छात्र प्रिंसिपल के सवालों से अक्सर डर जाते हैं और सब जानते हुए भी उन्हें सही जवाब नहीं दे पाते।"

अवलोकन के लाभ बटोरने से पहले हमें उसकी धारणाओं की जाँच करना आवश्यक है। एक शिक्षक या प्रधानाध्यापक के नाते, आपके लिए यह पता लगाना उपयोगी हो सकता है कि क्या अच्छे शिक्षण को साकार करने के अच्छे इरादे कहीं छात्रों के ज्ञान और सीखने को नुकसान तो नहीं पहुँचा रहे। क्या अवलोकन इसलिए है कि शिक्षक जवाबदेही पर खरे उतरें? या फिर अवलोकन को शोध का ऐसा उपकरण माना जाए जिससे हम शिक्षण की चुनौतियों को बारीकी-से समझ पाएँ और नई शिक्षण तकनीक को जाँच पाएँ?

अवलोकन की धारणा अवलोकन को रचती है। एक प्रभावी अवलोकन के लिए निम्नलिखित पाँच पहलू निर्धारित करना आवश्यक हैं:

- इस बात की स्पष्टता हो कि अवलोकन क्या माप रहा है।
- अवलोकन किस समय किया जाएगा।
- क्या अवलोकन के निष्कर्ष विश्वसनीय हैं।
- कैसे निश्चित किया जाए कि अवलोकन के निष्कर्ष सही हैं या नहीं।
- अवलोकन की प्रतिक्रिया कैसे दी जाए।

इन पाँच पहलुओं को ध्यान में रखते

हुए, चलिए तारा की कक्षा का अवलोकन करते हैं।

स्पष्टता: हमें शोध से यह पता चलता है कि एक गणित के पाठ का अवलोकन निम्नलिखित चीज़ों को मापता है:

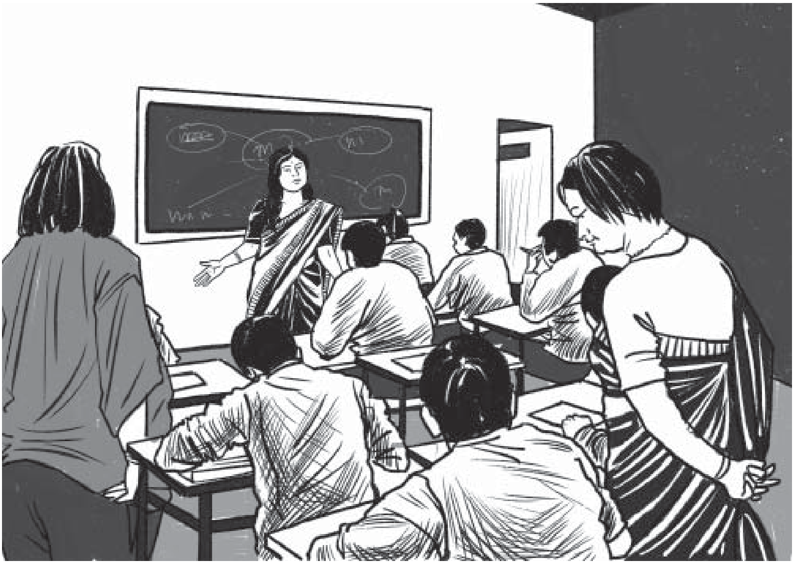
- शिक्षार्थी का ज्ञान आधार – यानी छात्र गणित के बारे में पहले से क्या जानते हैं।
- समस्या-समाधान रणनीतियों का उपयोग – यानी वे गणित समस्या को हल करने के लिए किन-किन नीतियों का प्रयोग करते हैं।
- मेटा-अनुभूति, विशेष रूप से स्व-निगरानी और स्व-नियमन – यानी क्या वे अपनी नीतियों और अपनाए गए तरीकों के प्रयोग के बारे में जागरूक हैं?
- विश्वास प्रणालियाँ – यानी गणित के छात्र होने के बारे में उनकी क्या मान्यताएँ हैं?

चूँकि ये मापदण्ड हर विषय के लिए अलग-अलग हो सकते हैं, एक ही अवलोकन फॉर्मेट से गणित या इतिहास के शिक्षण को मापना इस तरह होगा मानो हम दिल और गुर्दे को एक तरह जाँचें। इस वजह से हम विषयों की सूक्ष्मता और छात्र उन विषयों को कैसे समझते हैं, यह नहीं जान पाएँगे। और अवलोकन केवल ऊपरी बातें जैसे कि कक्षा में कितनी शान्ति है या क्या कॉपियों में लिखावट सुन्दर है, तक सीमित रह जाएगा।

समय: अवलोकन के लिए समय शिक्षक के साथ मिलकर निर्धारित किया जाना चाहिए और हो सके तो अवलोकनकर्ता को पूरी कक्षा-अवधि तक रहना चाहिए। शर्मिला द्वारा किए गए दस मिनट के अवलोकन की अवधि में पूरी पठन-पाठन क्रिया को समझना मुश्किल है। किस तरह एक गतिविधि दूसरी गतिविधि में तब्दील होती है और वह शिक्षण को कैसे आगे बढ़ाती है, यह जानने के लिए दस मिनिट अपर्याप्त हैं। अगर हम एक फिल्म पर राय बनाने के लिए उसे कम-से-कम मध्यान्तर तक देखते हैं तो एक सजीव कक्षा के लिए 40 मिनट देना अनुचित नहीं है।

अवलोकन केवल अप्रत्याशित नहीं होना चाहिए। इससे अवलोकन सिर्फ एक हौवा बनकर रह जाता है। इससे भी फर्क पड़ता है कि निर्धारित अवलोकन कब हो रहा है। अक्सर मध्यान्ह भोजन के तुरन्त बाद या स्कूल छूटने से कुछ पहले छात्र ज़्यादा चंचल या फिर व्याकुल रहते हैं।

अवलोकनकर्ता: यदि शिक्षण का अवलोकन शर्मिला जैसी वरिष्ठ अधिकारी की जगह कोई छोटी टीम करे तो बेहतर रहेगा। जब एक वरिष्ठ अधिकारी कक्षा का अवलोकन करता है तो शिक्षण और छात्रों का व्यवहार मात्र एक नाटकीय प्रदर्शन-सा बन जाता है, जिसमें छात्रों को कठपुतलियों की भाँति कविताएँ और



रटे हुए वाक्य (my name is Mala, I am in 5th standard) दोहराने पर ज़ोर दिया जाता है। इससे आप उनकी स्मरण शक्ति और नाट्य कला मापते हैं, विषय और सूझ-बूझ में सक्षमता नहीं। तारा की अध्यापन प्रणाली कम-से-कम छात्रों को भिन्न बनाने और जाँचने में अपनी सोच का इस्तेमाल करने का मौका देती है।

यदि 2-3 लोग साथ में अवलोकन करते हैं तो वे पहले से मुद्दों को आपस में अलग-अलग बाँट सकते हैं और गहराई से उन पर ध्यान दे सकते हैं। अगर शिक्षक एक-दूसरे का अवलोकन करें तो और भी बेहतर होगा। इससे सतर्कता कम होगी और शिक्षण कम नाटकीय होगा। ऐसे तरीके अपनाएँ जिसमें कुछ शिक्षक मिलकर शिक्षण पद्धति में बदलाव निर्धारित करते हैं और फिर उस बदलाव को शिक्षण में लाते हुए एक-दूसरे के शिक्षण का अवलोकन करते हैं। इससे अवलोकन शोध और चिन्तनशील विचार-विमर्श का एक स्रोत बन जाता है। अगर बाकी लोगों के लिए समय निकालना दूभर है तो तारा स्वयं एक कैमरा लगाकर अपनी शिक्षा का अवलोकन कर सकती है। आजकल के मोबाइल कैमरे इसके लिए काफी उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। हर हफ्ते स्टाफ मीटिंग के दौरान यदि शिक्षक अपने समूह-कार्य शिक्षण का पाँच मिनट का क्लिप भी दिखाएँ तो इससे शिक्षण पद्धति और समूह-



कार्य को बेहतर कैसे बनाया जाए, इस बारे में गहराई से विचार-विमर्श हो सकता है।

विश्वसनीयता: अवलोकन के निष्कर्षों को विश्वसनीय बनाने के लिए, अध्यापन के अनुभव के अलावा दूसरी बातों पर भी ध्यान दें। शर्मिला, तारा की पाठन योजना देखें कि उसमें शिक्षण की क्या विचारधारा थी। छात्रों की कॉपियों को देखें कि उनमें क्या-क्या लिखा गया है। क्या तारा ने हर छात्र को नियमित तौर से लिखित प्रतिक्रिया दी है? छात्रों से थोड़ी बातचीत करें कि तारा के अध्यापन की कौन-सी बातें उन्हें पसन्द हैं, कौन-सी गतिविधि उन्हें सोचने और समस्या का समाधान करने के लिए उकसाती हैं। क्या गणित के बारे में उनकी पुरानी धारणाएँ बदली हैं? तारा से कक्षा के बाहर बातचीत करके पता लगाएँ कि उन्हें अपने विषय के बारे में किस चीज़ में प्रभुत्व है। तारा अपने शिक्षण का किस तरह स्वयं अवलोकन करती है, क्या वह डायरी में अपना अनुभव लिखती है? जब कभी वह गणित पढ़ाते वक्त अटक जाती है या उसे कोई समस्या आती है तो वह उसे कैसे सुलझाती है?

प्रतिक्रिया: अवलोकन के बारे में प्रतिक्रिया देते समय, शिक्षण की ओर ध्यान दें, न कि शिक्षक की ओर। उदाहरण के तौर पर, शर्मिला को कहना चाहिए कि "समूह में छात्रों की भूमिका को स्पष्ट न करने की वजह

से उनमें एक-दूसरे से गणित सीखने का मौका कम हो गया है", न कि यह कहें, "तुम्हें छात्रों की भूमिका स्पष्ट करनी चाहिए थी"। अवलोकन में सकरात्मक पहलुओं पर भी बात करें। उदाहरण के तौर पर, शर्मिला कहें, "भिन्न को समूह-कार्य द्वारा समझाने की तकनीक नई थी।" प्रतिक्रिया स्पष्ट रहे तो उससे फायदा होता है।

अन्त में

कक्षा का अवलोकन उतना ही जटिल और सूक्ष्म है, जितना पढ़ाना। यदि अवलोकन को बेहतर बनाना है तो उसे शोध की तरह देखना होगा। उससे जिज्ञासा जागृत होगी और डर भी कम लगेगा। अच्छा शिक्षण वाकई में रॉकेट साइन्स से कम नहीं, इसलिए हमें उसका अवलोकन भी उतनी ही गहरी सोच से करना होगा – सिर्फ दस मिनट में कुछ सवाल पूछना और छात्रों से कविता सुनने की प्रथा को बदलना होगा। शिक्षकों और शिक्षण को बदलने के लिए हमें निरीक्षण और अवलोकन को भी बदलना होगा – यह कठिन ज़रूर है लेकिन तभी हम छात्रों को विषयों में दक्ष और उनके जीवन के प्रति संवेदनशील बना पाएँगे।

गोपाल मिड्ढा: पिछले 15 वर्षों से शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से जुड़े हैं। उन्होंने भारत एवं अमेरिका में शिक्षण नेतृत्व, अध्यापन, शिक्षक तैयारी और स्कूलों को कैसे बेहतर बनाया जाए पर शोध किए हैं। आजकल वे शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर एक अनुसंधान केन्द्र 'शिक्षा - एक खोज' (www.shikshaekkhoj) स्थापित करने में जुटे हैं।

सभी चित्र: अक्षय सेठी: वे रोज़मर्रा के अनदेखे, मामूली व बार-बार दोहराते पहलुओं में खुद को अपनी ड्रॉइंग, कॉमिक्स और इंस्टॉलेशन के ज़रिए झोंका करते हैं। कॉलेज ऑफ आर्ट, नई दिल्ली से पेंटिंग में स्नातकोत्तर। दिल्ली में ही रहते और काम करते हैं।

